सारांश

प्रस्तुत लघु शोध-कार्य **"ऐतिहासिक पर्यटन के विकास में निर्वचन की भूमिका"** ***(दिल्ली राज्य के 12वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी के मध्य निर्मित स्मारकों के संदर्भ में)*** विषय पर संपन्न किया गया है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में इतिहास और संस्कृति के प्रति नए सिरे से जिज्ञासाएँ उभर रही हैं और उनके उत्तरों की खोज के परंपरागत संसाधनों के साथ ही नवीन माध्यम भी प्रकाश में आ रहे हैं। जहाँ पहले ऐतिहासिक पर्यटन के लिए ऐतिहासिक स्थलों व स्मारकों का चयन ही पर्याप्त होता था, वहीं आज यह भी अनुभव हो रहा है कि इन सभी के बारे में व्यापक जानकारी भी मिले। इस कारण अनुवाद और निर्वचन का महत्व बढ़ रहा है। इनमें भी निर्वचन की भूमिका का व्यापक स्वरूप विशेष रूप से सामने आ रहा है। यह ऐतिहासिक पर्यटन और निर्वचन के निकट संबंध के अध्याय की शुरुआत है। इस आधारभूमि के आलोक में शोधार्थी ने इस लघु शोध योजना के अंतर्गत शोध-कार्य किया। इसके लिए एक विस्तृत शोध-प्रस्ताव निर्मित किया गया, जिसने शोध कार्य के दिशा-निर्देशक का कार्य किया।

संपूर्ण शोध-कार्य की सामग्री चार अध्यायों में विभाजित है। शोध-कार्य का प्रारंभ शोध-समस्या की व्याख्या के साथ ही शोध-प्रश्नों के निर्धारण से किया गया है। इसके अंतर्गत ऐतिहासिक पर्यटन और निर्वचन का क्या अंतरसंबंध है, ऐतिहासिक स्मारकों के इतिहास और उनकी पृष्ठभूमि को पर्यटकों तक पहुँचाने में निर्वचन की क्या भूमिका है, ऐतिहासिक स्मारकों के निर्वचन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली एवं प्रयुक्तियाँ क्या भूमिका निभाती हैं तथा निर्वचन द्वारा ऐतिहासिक पर्यटन के विकास के मार्ग में कौन-कौन-सी चुनौतियाँ आती हैं आदि प्रश्नों का समावेश है। इन प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में शोध-कार्य के उद्देश्य भी निर्धारित किए गए; जैसे, ऐतिहासिक पर्यटन की प्रासंगिकता को जानना, ऐतिहासिक स्मारकों के पर्यटन के विकास में निर्वचन की आवश्यकता का अध्ययन करना, ऐतिहासिक पर्यटन के संदर्भ में निर्वचन में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली का अध्ययन करना और ऐतिहासिक पर्यटन और निर्वचन के अंतरसंबंध का विवेचन करना आदि। शोध-प्रविधि का निर्धारण और उसकी प्रासंगिकता भी शोध-समस्या, प्रश्न और उद्देश्य के संदर्भ में विवेचित की गई।

शोध-कार्य की सैद्धांतिक व अवधारणात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ऐतिहासिक पर्यटन तथा निर्वचन की विभिन्न परिभाषाओं की प्रस्तुति के साथ ही इनके स्वरूप व भूमिका का अध्ययन प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन विकास के नए अवसर पैदा करता है। उसकी उपयोगिता है, किसी क्षेत्र की विरासत को जानना, स्मारकों को संरक्षित करने और क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना, इतिहास की जानकारी उपलब्ध होना,समाज और उनसे जुड़ी सांस्कृतिक विरासत को जानना, आर्थिक (पर्यटन + संस्कृति + विरासत = अर्थव्यवस्था के विकास के आधार) लाभ की प्राप्ति, इतिहास की घटनाओं के माध्यम से वर्तमान जीवन के अंतर्विरोधों की समझ और उन्हें हल करने की प्रेरणा। और इतिहास और मनुष्य के संबंध को समझना।

ऐतिहासिक पर्यटन के संदर्भ में निर्वचन की विशेष भूमिका है। इसका एक कारण यह है कि ऐतिहासिक स्मारकों का संबंध जिस कालखंड विशेष से होता है, उसकी भाषा के पुरानी होने के साथ ही उसकी समझने संबंधी जटिलताएँ बढ़ती जाती हैं। समय के बीतने के साथ, नए युग के नए परिवेश में प्रवेश करने पर हम अपने पूर्वजनों की भाषा, संस्कार, परिस्थितियों तथा उस समय के भाव-बोध से कोसों दूर चले जाते हैं। तब यह आवश्यक हो जाता है कि इन सबको आसानी से समझाने वाले माध्यम अपनाए जाएँ। निर्वचन इसमें हमारी सहायता करता है ऐतिहासिक-पर्यटन की दृष्टि से किए जाने वाले निर्वचन में पर्यटक गाइड द्वारा सूचनाओं, ऐतिहासिक-पौराणिक चरित्रों, स्थानों और घटनाओं आदि की व्याख्या की जाती है। निर्वचन के माध्यम से तथ्यों और सूचनाओं का संप्रेषण बोधात्मक स्तर पर संभव होता है। सूचनाओं का संप्रेषण व्यवहार की भाषा में किया जाता है, अत: जटिल शब्दावलियों का प्रयोग निर्वचन के सहारे किया जाता है।

शोध-कार्य के मूल आधार के रूप में दिल्ली राज्य के 12वीं से 20वीं शताब्दी के मध्य निर्मित स्मारकों का चयन किया गया, जिनमें कुतुबमीनार, तुगलकाबाद किला, सिकंदर लोदी का मकबरा, पुराना किला, हुमायूँ का मकबरा, लाल किला, जामा मस्जिद, जंतर-मंतर, सफ़दरजंग का मकबरा, और इंडिया गेट शामिल हैं। स्मारक-भवनों के विवरण के साथ ही स्थापत्य-कला, निर्माण-सामग्री, निर्माण-काल, साज-सज्जा शैली, उपयोग, संबंधित इतिहास-कथा-प्रसंगों व मान्यताओं आदि के आधार पर प्रत्येक ऐतिहासिक स्मारक का निर्वचनपरक परिचय प्रस्तुत किया गया।

ऐतिहासिक पर्यटन के विकास में निर्वचन की भूमिका के मूल्यांकन की दृष्टि से इस शोध-योजना में क्षेत्रीय-कार्य प्रविधि और उसके माध्यम से पाठ-संकलन तथा विश्लेषण का विशेष महत्व है। इस हेतु की गई यात्राओं के फलस्वरूप संकलित पाठों का विश्लेषण किया गया। इसमें पर्यटक-प्रश्नावली, पर्यटक-गाइड प्रश्नावली, पर्यटन एवं एजेंसी अधिकारी प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों और पर्यटन पाठ्यक्रम प्राध्यापक के साक्षात्कार का विश्लेषण सम्मिलित है।

सर्वेक्षण के दौरान पाया गया कि दिल्ली में ऐतिहासिक स्मारकों पर सभी महाद्वीपों से पर्यटक आते हैं। भिन्न भाषा बोलने के कारण ये पर्यटक अपनी भाषा का गाइड लेते हैं, जो उन्हें इन स्मारकों के बारे में विस्तारपूर्वक बताता है। उसे निर्वचन करते समय अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें भाषा से संबंधित चुनौतियाँ मुख्य रूप से निर्वचन को प्रभावित करती हैं। यह निर्वचन भाषा की गति और उससे जुड़ी बाध्यताओं पर निर्भर करता है। शोध-कार्य के दौरान पर्यटकों से बातें करने के बाद उभरी भाषा संबंधी चुनौतियाँ चिंताजनक हैं; जैसे, भाषा पर अधिकार संबंधी चुनौती, उच्चारण और बलाघात संबंधी चुनौती, व्याकरण संबंधी चुनौतियाँ और भाषा में संप्रेषणशीलता संबंधी चुनौती। इनके अलावा संस्कृति के वास्तविक रूप से परिचित कराने की चुनौती, ऐतिहासिक निर्वचन की सैद्धांतिक समस्याएँ, प्रेरणा और प्रोत्साहन की चुनौती, निर्वचन को प्रामाणिक व प्रासंगिक बनाए रखने की चुनौती, जिज्ञासा-शांति एवं संतुष्ट करने की चुनौती, प्रशिक्षण संबंधी चुनौती, अध्ययनशीलता संबंधी चुनौती, व्यावसायिक आचरण के प्रभावशाली होने की चुनौती, सूचना और निर्वचन में अंतर की पहचान की चुनौती आदि भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इन सभी का अध्ययन तथा विश्लेषण शोध-कार्य में किया गया।

किसी विशेष क्षेत्र और परिवेश की अपनी कुछ स्वतंत्र विशेषताएँ होती हैं। जो अन्य से किसी न किसी रूप में भिन्न होती हैं। जिन्हें समझने के लिए उसी परिवेश को महसूस करना अत्यंत आवश्यक है।

निर्वचन की ऐतिहासिक पर्यटन के विकास संबंधी भूमिका को समझने और उसे समृद्ध बनाने की दृष्टि से इस शोध-कार्य में एक विशेष कार्य बारहवीं से बीसवीं शताब्दी के कालखंड में दिल्ली राज्य से संबंधित शब्दावली का संग्रह, अर्थ और निर्वचन है। इसके अंतर्गत भवन निर्माण-कला, संस्कृति, धर्म, शिक्षा, सैन्य-व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, प्रशासन,

मनोरंजन, प्रशासनिक व अन्य विभाग, कर, परिधान, आदि से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का निर्वचन तथा प्रमुख लेखकों, संगीतकारों और चित्रकारों का परिचय सम्मिलित है।

शोध कार्य में प्रयुक्त सामग्री परिशिष्ट में दी गयी है, जिसमें पर्यटकों से किए गए प्रश्नों के मूल उत्तर, गाइड द्वारा दी गई मूल सूचनाएँ, पर्यटन कार्यालयों से प्राप्त जानकारियों की मूल सारिणी, स्मारकों पर जाकर लिए गए छाया चित्र, भारतीय पुरातत्व विभाग से प्राप्त बुलेटिन, भारत पर्यटन विकास निगम से प्राप्त इश्क-ए-दिल्ली, प्रकाश एवं ध्वनि प्रदर्शन कार्यक्रम की सीडी, लाल क़िले और पुराने क़िले पर प्रकाश एवं ध्वनि कार्यक्रम की रिकोर्डिंग, दिल्ली पर्यटन विकास एवं परिवहन निगम से प्राप्त पुस्तिकाएँ जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के पर्यटन विभाग के विभागाध्यक्ष द्वारा लिए गए साक्षात्कार की मूल प्रति, पर्यटक प्रश्नावली, गाइड प्रश्नावली, पर्यटन कार्यालयों और एजेंसियों से प्रश्नों के मिले उत्तर की मूल प्रति आदि उपलब्ध हैं। इनके अलावा इस शोध कार्य में प्रयुक्त पर्यटन, गाइड, और पर्यटन विभाग के सूचना अधिकारी की प्रश्नावलियों के नमूने भी दिये गए हैं।

प्रस्तुत लघु शोध-कार्य की उपलब्धियाँ और इस क्षेत्र में भावी शोध-कार्य की संभावनाएँ निम्नांकित हैं :

उपलब्धियाँ :

- निर्वचन और ऐतिहासिक पर्यटन का नाभि-नाल संबंध है। ऐतिहासिक पर्यटन की कल्पना निर्वचन के बिना नहीं की जा सकती।
- ऐतिहासिक पर्यटन में इतिहास, संस्कृति, समाज, राजनैतिक स्थितियों, परम्पराओं, स्थापत्य की विविध शैलियों, कला, साहित्य आदि का समावेश है। ये सभी पर्यटकों के अनुभवों का अविभाज्य अंग बनने के लिए निर्वचन पर आश्रित हैं।
- पर्यटन की दृष्टि से निर्वचन की अनेक भूमिकाएँ हैं और प्रत्येक भूमिका के एकाधिक पक्ष हैं। निर्वचन अपनी समस्त भूमिकाओं का जितनी सक्षमता से निर्वाह करता है, उतना ही ऐतिहासिक पर्यटन का विकास होता है।
- स्वयं निर्वचन की प्रासंगिकता, प्रामाणिकता, उपयोगिता और महत्ता भी ऐतिहासिक पर्यटन की कसौटी पर कसे जाने के फलस्वरूप प्राप्त परिणामों पर निर्भर है। निर्वचन द्वारा ऐतिहासिक स्मारकों, इतिहास और कलाओं का पर्यटकों के साथ जितना और जैसा संवाद स्थापित होगा, उतना ही निर्वचन को सफल घोषित किया जाएगा।
- ऐतिहासिक स्मारकों के स्थापत्य और काल विशेष की समग्रता को जो विशिष्ट व पारिभाषिक शब्द गहराई से रेखांकित करते हैं, वे निर्वचन के माध्यम से ही पर्यटकों की समझ तथा स्मृति का अंग बनते हैं। ये शब्द और उनका निर्वचन पर्यटक-गाइडों की संपदा है। इस संपदा का निर्माण किया जाना अनिवार्य है।
- ऐतिहासिक पर्यटन के विकास के लिए इतिहास और संस्कृति जैसे समाज वैज्ञानिक विषयों की गहरी जानकारी के साथ ही निर्वचन का गहन प्रशिक्षण भी अनिवार्य है।
- निर्वचन को ऐतिहासिक पर्यटन नीति में महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। पर्यटन-स्थल, स्मारक, पर्यटन-विभाग, पर्यटन-शिक्षण, पर्यटक-गाइड और पर्यटक को इकाई मान कर सरकारों द्वारा इस नीति की रूपरेखा तैयार की जानी चाहिए।

- प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत संकलित पाठों के अध्ययन व विश्लेषण के फलस्वरूप दिल्ली राज्य के ऐतिहासिक स्मारकों का निर्वचन किया गया। इससे इस तथ्य को बल मिला कि निर्वचन के माध्यम से ऐतिहासिक स्मारकों का पर्यटकों के साथ भावनात्मक संबंध विकसित किया जा सकता है।
- आठ शताब्दियों के कालखंड की बाह्य तथा आंतरिक संरचना को स्पष्ट करने वाले पारिभाषिक शब्दों की निर्वचनपरक व्याख्या प्रस्तुत शोध-कार्य की एक और विशिष्ट उपलब्धि है। यह ऐतिहासिक पर्यटन के विकास के लिए नवीन सामग्री के निर्माण के अभियान का प्रारंभ है। इस सामग्री का उपयोग पर्यटन विभाग द्वारा किया जा सकता है।

संभावनाएँ :

- यह शोध-कार्य लघु स्तर पर किया गया है और इसे सीमित अवधि में ही संपन्न भी किया गया है, अत: इसके निष्कर्ष ऐतिहासिक पर्यटन और निर्वचन के क्षेत्र में भावी लघु और विशाल शोध-कार्यों का आधार बन सकते हैं।
- अभी तक निर्वचन को सीमित भूमिकाओं में समझे जाने की रीति प्रचलित है। यह शोध-कार्य उसके उपयोग और महत्व को व्यापक परिप्रेक्ष्य में विवेचित किए जाने का आधार प्रस्तुत करता है, जिसे भावी शोधकर्ता अपनी दिशाएँ खोजने में काम में ले सकते हैं।
- इस शोध-कार्य में दिल्ली के ऐतिहासिक स्मारकों का निर्वचन किया गया है। इसके आधार पर तथा अपनाई गई प्रविधि में आवश्यक बदलाव करके देश भर के स्मारकों का निर्वचन किया जा सकता है।
- स्मारकों और इतिहास, संस्कृति व अन्य क्षेत्रों से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली के निर्वचन की सहायता से पर्यटक-गाइडों द्वारा एक कालखंड विशेष हेतु उपयोग के लिए पर्याप्त सामग्री का निर्माण कर दिया गया है। इस प्रयोग को भावी शोधकर्ता आगे बढ़ाने व नए ढंग से शोध करने के लिए प्रयोग में ला सकते हैं।
- इस शोध-कार्य का एक निष्कर्ष यह है कि ऐतिहासिक पर्यटन के विकास के लिए निर्वचन को पर्यटन-नीति का अंग बनाया जाना चाहिए। भावी शोधकर्ता इस निष्कर्ष के आधार पर स्वतंत्र शोध-कार्य कर सकते हैं।
- ऐतिहासिक पर्यटन संबंधी शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के स्वरूप की ओर इस शोध-कार्य में संकेत मात्र किया गया है। भावी शोधकर्ताओं के लिए यह एक प्रभावशाली शोध-क्षेत्र हो सकता है।
- निर्वचन के महत्व को ध्यान में रखते हुए शिक्षण-संस्थानों में उसके विविध पक्षों को शिक्षण और शोध का विषय बनाया जा सकता है।
- इस शोध-कार्य में मानव साधित निर्वचन के साथ ही तकनीकी व प्रौद्योगिकी के सहयोग से विकसित संसाधनों के माध्यम से किए जाने वाले निर्वचन का संक्षिप्त अध्ययन भी किया गया है। इसे स्वतंत्र शोध का विषय बनाया जा सकता है।

अनुज कुमार गौतम

शोधार्थी